तुअर की प्रथम संकर किस्म

इस बात में 30 साल लगे हैं, लेकिन अब अंततः दुनिया की सबसे पहली संकर फलीदार फसल आने वाली है। दावा है कि इससे उत्पादन में 40 प्रतिशत तक वृद्धि होगी। दुनिया भर में करोड़ों लोगों के लिए फलियां प्रोटीन का सस्ता और बढ़िया स्रोत होती हैं। खास तौर से अफ्रीका और एशिया के लोगों के लिए ये प्रोटीन का बहुत महत्वपूर्ण स्रोत हैं। लिहाज़ा अधिक उपज वाली फसल अत्यधिक लाभदायक हो सकती है। लेकिन फलीदार फसलें आम तौर पर पर स्व-परागित होती हैं। अर्थात इनमें एक ही फूल के पराग कण उसी फूल के अण्डाणुओं का निषेचन कर देते हैं। यह बात संकर किस्में तैयार करने में बाधक होती है क्योंकि संकरण के लिए पर-परागण आवश्यक होता है।

हाल ही में आंध्र प्रदेश के पटनचेरू में स्थित इंटरनेशनल क्रॉप रिसर्च इंस्टीट्यूट फार दी सेमी-एरिड ट्रॉपिक्स (ICRISAT) के कुलभूषण सक्सेना और उनके साथियों ने तुअर की संकर किस्म बनाने में सफलता प्राप्त की है। इसको बनाने के लिए ज़रूरी था कि तुअर की एक ऐसी किस्म तैयार की जाए जिसके नर अंग अनुर्वर हों ताकि इनके अण्डाणुओं का निषेचन अन्य किस्मों के पराग कणों से करवाया जा सके और अधिक उपज वाली व प्रोटीन से भरपूर किस्म तैयार हो सके।

ICRISAT ने पुष्कल नामक पहली संकर किस्म हाल ही में बाज़ार में उतारी है। संस्थान के प्रबंधक विलियम डार का कहना है, "पुष्कल एक जादुई तुअर है।" ***(स्रोत फीचर्स)***